International Journal of Applied Research 2016; 2(12): 825-827

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(12): 825-827
www.allresearchjournal.com
Received: 10-10-2016
Accepted: 19-11-2016

डॉ० राम बालक राय
पूर्व शोधार्थी, विश्वविद्यालय हिन्दी–विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ० राम बालक राय
पूर्व शोधार्थी, विश्वविद्यालय हिन्दी–विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा, बिहार, भारत

हिन्दी साहित्य पर बौद्ध–धर्म–दर्शन का प्रभाव

डॉ० राम बालक राय

सारांश
भारतीय वाङ्मय में उपजीव्य काव्य के रूप में क्रमशः राम, कृष्ण और बुद्ध इन तीन महापुरुषों के जीवन–चरित्र एवं इनसे सम्बन्धित पात्रों को आधार बनाकर लिखे गये ग्रन्थ सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं। राम और कृष्ण की तुलना में भगवान् बुद्ध एवं उनसे सम्बन्धित पात्रों या स्थलों को आधार बनाकर लिखे गये ग्रंथ अपेक्षाकृत कम हैं, किन्तु वे अनुपेक्षणीय नहीं है। संस्कृत–साहित्य में अश्वघोष एवं प्राकृत–अपभ्रंश–साहित्य में विमल सूरि एवं स्वयंभू की रचनाएँ प्रसिद्ध हैं। इसके बावजूद यदि भारत को आधुनिक भाषाओं के साहित्य में बुद्ध या इनसे सम्बन्धित पात्रों का आधार बनाकर रचनाएँ नहीं की गईं, तो इसका कारण बुद्ध एवं उनसे सम्बन्धित पात्रों की चारित्रिक उदात्तता का अभाव नहीं, अपितु बौद्ध–धर्म के साम्प्रदायिक ग्रंथों में किये गये मनमाने हेर–फेर हैं। भगवान् बुद्ध ने अपने संचरण–क्षेत्रों में जब और जिस भाषा में उपदेश किया, उसका बहुत प्रामाणिक स्वरूप उपलब्ध नहीं होता। भगवान् बुद्ध के महाप्रयाण के कुछ सौ वर्षों बाद संस्कृत, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश इन भाषाओं के जानकार इनके पंडित शिष्य एकत्र हुए और इन लोगों ने भगवान् बुद्ध के उपदेशों को अपनी–अपनी भाषाओं में प्रस्तुत किया। भगवान् बुद्ध के उपदेशों को लिपिबद्ध एवं ग्रंथबद्ध करने में सम्राट् अशोक का योगदान सर्वोपरि माना जाता है, क्योंकि जो सम्राट् अशोक प्रारंभ में अपनी प्रबल रक्त–पिपासा और साम्राज्य–विस्तार की अदम्य लालसा के कारण अपने व्यवहारों से 'चंडाशोक' कहलाता था, वही सम्राट् अशोक परवर्ती काल में भगवान् बुद्ध का शिष्य बनकर और शान्ति का तथाकथित उपासक बनकर 'देवानांप्रिय प्रियदर्शी अशोक' की उपाधि से अलंकृत हुआ। भारत के विभिन्न भागों में ही नहीं, भारत से बाहर श्रीलंका, वर्मा, स्याम, मलाया, चीन, जापान–जैसे समीपवर्ती अन्य देशों में भी इन्होंने धर्मदूत भेजे एवं भगवान् बुद्ध के उपदेशों का प्रचार–प्रसार कराया। [1]

प्रस्तावना
आधुनिक हिन्दी साहित्य की विधिवत शुरूआत 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से हुई है और लगभग यही समय भारत में लुप्तप्राय बौद्ध धर्म के पुनर्जागरण–काल का भी है। इस समय जेम्स प्रिंसेप और अलेक्जेन्डर कनिंघम जैसे पुरातत्वविदों और मैक्समूलर जैसे उद्भट संस्कृत विद्वानों के सत्प्रयास से बौद्ध धर्म के तीर्थस्थलों, स्मारकों व पाली एवं संस्कृत बौद्ध–साहित्य का पुनरुद्धार हुआ। [2]
भारत में भी बौद्ध धर्म के इस पुनर्जागरण का श्रेय कुछ हद तक पाश्चात्य–जगत् को जाता है जिसने इसमें रुचि ली और बौद्ध धर्म से सम्बन्धित स्थलों व साहित्य का परिष्कार किया। [3] एक ओर ईसाई धर्म के प्रोटेस्टेंट मत वाले ब्रिटेन ने बौद्ध धर्म के 'सुधारवादी रूप', स्थाविरवाद (थेरवाद) में अपनी रुचि दिखाते हुए अपने अधीनस्थ श्रीलंका के स्थविरवाद बौद्ध धर्म के पाली ग्रन्थों को प्रकाशित किया तो दूसरी ओर कैथोलिक मतानुयायी फ्रांस एवं इटली के विद्वानों ने चीन, जापान एवं तिब्बत में उपलब्ध महायान सूत्रों और भाष्यों में अपनी रूचि दिखायी। [4] ओल्डेन बर्ग, रिज डेविड्स, स्त्चेरबातस्की जैसे बौद्ध विद्वानों के प्रयत्नों संस्कृत एवं पाली ग्रंथों के अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित हुए तथा बौद्ध धर्म के महत्वपूर्ण तथ्यों और साहित्य से बाह्य जगत को अवगत कराया। एडविन आर्नाल्ड, सोपेनहावर तथा हर्मन हेसे जैसे दार्शनिकों और साहित्यकारों अपनी रचनाओं के विषय वस्तु के रूप में बुद्ध और बौद्ध–दर्शन को ग्रहण कर उसकी मुक्तकंठ प्रशंसा की। [5]
बौद्ध धर्म के इस पुनर्जागरण ने हिन्दी जन–मानस को भी प्रभावित किया। ईश्वरवाद और आत्मवाद के अनिच्छुक इस धर्म दर्शन के समन्वयवादी रूप ने आधुनिक हिन्दी साहित्य को एक नयी स्फूर्ति और चेतना दी लेकिन फिर भी एक बात स्पष्ट है कि आरंभिक दौर के आधुनिक हिन्दी युग के कवि और रचनाकार भले ही अपनी रचनाओं की पृष्ठभूमि के रूप में कुछ प्रेरणा ली हो पर उनकी रचनाओं पर बौद्ध–दर्शन के मूलभूत दार्शनिक सिद्धान्तों का प्रभाव अत्यन्त अल्प था और जो कुछ भी दार्शनिक पृष्ठभूमि इनके रचनाओं में परिलक्षित हुई वह बौद्ध धर्म के तुलना में बौद्ध–दर्शन से कुछ हद तक साम्यता रखने वाले औपनिषदिक दर्शन के अधिक निकट थी। इसका एक प्रत्यक्ष कारण तो यह था कि उस समय में बौद्ध–दर्शन के मूलभूत ग्रंथों की अनुपलब्धता थी। [6] वस्तुतः बौद्ध धर्म और दर्शन से सम्बंधित अधिकांश प्रामाणिक साहित्य व शोध ग्रंथों का प्रकाशन पिछले चार–पांच दशकों में

ही संभव हो सका है और यही कारण है कि प्रस्तुत लेख मेंजिन रचनाकारों या रचनाओं में बौद्ध–धर्म–दर्शन के प्रभाव का अध्ययन किया है, संभवतः उनमें से अधिकांश बौद्ध धर्म के सैद्धांतिक स्वरूप से उस स्तर पर परिचित नहीं हो पाये थे जिस स्तर पर आज हुआ जा सकता है। कुछ अपवादों को छोडकर, इन रचनाकारों की कृतियां मुख्यतः बौद्ध धर्म के उस स्वरूप से अनुप्राणित हैं जो बौद्ध धर्म को औपनिषदिक दर्शन से विरासत में मिली हैं। [7]

आधुनिक हिन्दी साहित्यकारों में मैथिलीशरण गुप्त, रामचन्द्र शुक्ल, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रा नन्दन पन्त, महादेवी वर्मा, हजारी प्रसाद द्विवेदी, चतुरसेन शास्त्री, राहुल सांकृत्यायन, 'अज्ञेय', यशपाल, रांगेय राघव, मोहन राकेश, डॉ0 रमाकान्त पाठक आदि की कुछ रचनायें बौद्धदर्शन से प्रत्यक्षतः सम्बन्ध रखती हैं। [8]

वरिष्ठ आलोचक रामचन्द्र शुक्ल ने एडविन आर्नाल्ड द्वारा रचित 'द लाईट आफ एशिया' का अनुवाद 'बुद्धचरित' नाम से किया है जो मूलतः बुद्ध के जीवन की एक रूप–रेखा प्रस्तुत करती है। [9] बौद्ध धर्म से सम्बंधित प्रारम्भिक रचनाओं में गुप्त जी की 'यशोधरा' एक प्रमुख कृति है जो बुद्ध की पत्नी यशोधरा के नारी मन की सविस्तार करुण–गाथा है। [10]

छायावादी चिन्तनधारा के प्रमुख स्तंभ जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित नाटक– राजश्री, विशाखा, अजातशत्रु, स्कन्दगुप्त, चन्द्रगुप्त तथा सम्राट कनिष्क के घटनाक्रम उन सम्राटों से सम्बंधित है जिन्होंने बौद्ध धर्म को राज्याश्रय दिया। इनके साहित्य में बौद्ध धर्म के सिद्धान्त यत्र–तत्र मिलते हैं। व्यक्ति निर्वाण की अपेक्षा समष्टि हित पर अधिक बल देकर इन्होंने बौद्ध धर्म के महायान परम्परा वाले दर्शन को अपनाया है। इनकी रचनाओं में संसार के संघर्षों से विरक्त होकर संसार त्याग का उपदेश न होकर निष्काम भाव से कर्मरत रहने की प्रेरणा है। [11] महादेवी वर्मा की रचनाओं में बौद्ध धर्म के दुखवाद और करुणा के सिद्धान्त का प्रभाव स्पष्ट रूप में देखा जा सकता है। इसी तरह छायावाद के एक अन्य स्तंभ निराला की रचनाओं में बौद्ध धर्म के पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग दिखता है। यद्यपि निराला बुद्ध की कठिन साधना व उनके आध्यात्मिक सिद्धान्तों से प्रभावित तो लगते हैं पर वे उनके मध्यम मार्ग के दर्शन की चर्चा नहीं करते। सुमित्रा नन्दन पन्त ने भी अपने विपुल वांग्मय में 'बुद्ध के प्रति' एक छोटी कविता लिखकर अपनी श्रद्धा व्यक्त की है। [12]

चिन्तन और सृजन के विलक्षण प्रतिभा वाले हजारी प्रसाद द्विवेदी के दो उपन्यासों, 'बाणभट्ट की आत्मकथा' और 'चारु चंद्रलेखा' की कथा–वस्तु बौद्ध धर्म के तांत्रिक रूप से सम्बंधित है। बाणभट्ट की आत्मकथा के अंतिम भाग में द्विवेदी जी ने बौद्ध आचार्य सुगतभद्र के वार्तालाप के माध्यम से तत्कालीन बौद्ध धर्म का तंत्रोन्नमुखी रूप दिखलाया है। चारू चंद्रलेख की कथा–वस्तु का काल 'बाणभट्ट की आत्मकथा' के परवर्ती युग का है जब बौद्ध धर्म का तांत्रिक संप्रदाय चर्मोत्कर्ष पर था, जो इस उपन्यास की कथा–वस्तु का एक बडा भाग है। तांत्रिक बौद्ध–दर्शन के साथ किंवदन्तियों को मिलाकर द्विवेदी जी ने बौद्ध धर्म में आई विकृतियों को भी दिखाया है। 'भदन्त अमोघवज्र' के माध्यम से द्विवेदी जी ने बौद्ध–दर्शन के महायान संप्रदाय की प्रासंगिकता को उजागर किया है जिसमें व्यक्तिगत मुक्ति की जगह समष्टि के चित्त के परिष्कार की श्रेष्ठता स्थापित की गयी है। [13]

अज्ञेय आधुनिक हिन्दी साहित्य के उन चन्द रचनाकारों में से हैं जिन्होंने बौद्ध धर्म के दार्शनिक सिद्धान्तों को गहराई से समझा है। 'असाध्य वीणा' और 'आंगन के पार–द्वार' की रचनाओं पर बौद्ध–दर्शन का स्पष्ट प्रभाव है। इन्होंने 'उत्तरप्रियदर्शी' नामक एक काव्य नाटक की रचना भी की है जो अशोक के कलिंग विजय के बाद के घटना क्रमों पर आधारित है। महापंडित राहुल सांकृत्यायन ने अपने दो उपन्यासों 'सिंह सेनापति' तथा 'जय यौधेय' की कथा–वस्तु में बौद्ध–मतों का साम्यवादी विचारधारा के साथ समन्वय किया है। 'सिंह सेनापति' मे लिच्छवी के प्रजातंत्र के सामाजिक विशेषताओं का चित्रण है। इसमें नायक 'सिंह सेनापति' बुद्ध ओर संघ की शरण में चला जाता है। [14] 'जय यौधेय', जो गुप्तकाल की घटनाओं पर आधारित है, में अनित्यवाद और अनात्मवाद आदि बौद्ध–सिद्धान्तों की पुष्टी की गयी है। ऐतिहासिक उपन्यासकार चतुरसेन शास्त्री की रचना 'बोधिवृक्ष की छाया में' बौद्ध धर्म के तीन शलाकापुरुष बुद्ध, अशोक और हर्षवर्धन के जीवन–वृत को प्रस्तुत करती है। 'वैशाली की नगरवधु' इनकी एक अन्य रचना है जिसका कथानक बौद्ध कालीन राजनर्तकी आम्रपाली पर आधारित है।

क्रातिकारी एवं मार्क्सवादी चिन्तक यशपाल के ऐतिहासिक उपन्यास 'दिव्या' की कथा–वस्तु हर्षवर्धन काल से सम्बन्धित है। भौतिकवादी दर्शन पर आधारित इस उपन्यास में पतनोन्नमुख बौद्धकालीन समाज का चित्रण है। 'अमिता' यशपाल का दूसरा ऐतिहासिक उपन्यास है जो अशोक के कलिंग विजय पर आधरित है। यशपाल ने अपने इन दोनों उपन्यासों में मूलतः राजनितिक और सामाजिक मुद्दों की ही चर्चा की है। प्रगतिशील कथा–साहित्य के महत्वपूर्ण स्तंभ रांगेय राघव ने अपने दो ऐतिहासिक उपन्यासों में बौद्धकालीन घटनाओं को अपनी कथा क विषय बनाया है। [15] 'यशोधरा जीत गई' में रांगेय राघव ने बुद्ध और यशोधरा को माध्यम बनाते हुए नारी जीवन धर्म को तत्कालीन परिस्थितियों का ऐतिहासिक दृष्टिकोण से विवेचन किया है। अपने एक अन्य उपन्यास 'चीवर' में रांगेय राघव ने सम्राट हर्षवर्धन और उनकी बहन राज्यश्री की कथा के माध्यम से उस समय के राजनीतिक और सामाजिक व्यवस्था पर बौद्ध धर्म के प्रभाव को दर्शाया है। इन दोनों उपन्यासों में बौद्ध धर्म दर्शन की मान्यताओं और इसके उदात्त मानवीय स्वरूप की स्वीकृति स्पष्ट दिखती है। मोहन राकेश के नाटक 'लहरों के राजहंश' का कथानक बुद्ध के जीवनकाल से सम्बंधित है। नन्द और सुन्दरी के वार्तालापों पर बौद्ध–दर्शन का परोक्ष प्रभाव है। [16]

समकालीन हिन्दी साहित्य पर भी बौद्ध धर्म का प्रभाव दिख रहा है। हिन्दी पत्रिकाओं में स्थापित व नए रचनाकारों की रचनाओं मे यदा–कदा बुद्ध से सम्बन्धित घटनाओ या बौद्ध–दर्शन की झलक मिल जाती है। हाल मे ही प्रकाशित कवि केदारनाथ सिंह के काव्य संकलन 'तोलसतोय व साइकिल' की कविता 'बुद्ध से' उल्लेखनीय है। [17]

स्वातन्त्र्योतर भारत में सामजिक और राजनितिक नवजागरण, जवाहरलाल नेहरू के सत्प्रयास व लोहिया और अम्बेडकर के विचारों के कारण बौद्ध धर्म एक बार फिर चर्चा में आया है। अम्बेडकर की चिन्तन– शैली तथा उनकी पुस्तक 'बुद्ध और उनका धम्म' बौद्ध धर्म की नई अवधारणा प्रस्तुत करती है। [18] यद्यपि अम्बेडकर स्वयं बौद्ध धर्म के कई मूलभूत सिद्धान्त, जैसे चार आर्य सत्य के प्रति अपनी शंका प्रकट करते हैं फिर भी बुद्ध और बौद्ध धर्म के मानवीय दृष्टिकोण से अत्यन्त प्रभावित हैं। अम्बेडकर ने बौद्ध धर्म को नए सन्दर्भ में प्रस्तुत किया है जिससे जड़तावादी विचार व्यवस्था को तोड़ने की प्रेरणा मिलती है तथा दलित विमर्शी साहित्य के अधिकांश हिन्दी रचनाकार इससे प्रेरित हुए हैं। रूढग्रस्त परम्पराओं से असन्तुष्ट कई साहित्यकारों ने अपने साहित्य को इस नई धारा से जोड़ा है। बुद्ध के जातिगत श्रेष्ठता के विरोधीमूलक स्वर ने दलित साहित्य को प्रभावित किया है जिससे वर्तमान हिन्दी साहित्य का सम्पूर्ण फलक प्रभावित हुए बिना नहीं रह सका है। हालांकि जहां दया पवार और अर्जुन डांगले जैसे मराठी तथा अन्य भारतीय भाषा के दलित साहित्यकारों के रचनाओं का सरोकार बुद्ध या उनके धर्म से प्रत्यक्षतः जुडा हुआ है वहीं हिन्दी के अधिकांश दलित साहित्यकारों ने अपने अनुभव को ही आधार भूमि मानते हुए अपनी रचनाओं को गति दी है। इनकी अधिकांश रचनाएं बौद्ध धर्म दर्शन के उस पक्ष से अंशतः जुड़ी हैं जिनमें भेदमूलक व्यवस्था का विरोध और परिवर्तन का संकल्प सन्निहित है।

डॉ0 रमाकान्त पाठक की कृतियाँ श्रुति–प्रतिपादित सिद्धान्तों से प्रभावित हैं तथा बौद्ध–दर्शन तथा कथानक के आलोक में भी रचित हैं। [19] डॉ0 पाठक मूलतः श्रौत परम्परा के पोषक हैं, इसीलिए उनकी बौद्ध–कृतियों में प्रकारान्तर से श्रुतियों में वर्णित तथ्य ही व्यंजित हुए हैं। भगवान् बुद्ध ने वैदिक हिंसावाद का खण्डन किया परन्तु वे वैदिक ज्ञानवाद के पक्षधर थे।

डॉ0 रमाकान्त पाठक की कृतियों में वैदिक अद्वैतवाद, आत्मवाद तथा वैश्विक एकता के उन्मीलन का प्रेक्षण किया जा सकता है। 'तथागत', 'बिंबिसार', 'आम्रपाली', 'राजगृह' आदि इनकी बौद्ध–कृतियाँ हैं, जिनमें बौद्ध–दर्शन की आष्टांगिक साधना तथा त्रिविध अनुपश्यनाओं के अतिरिक्त श्रुति–प्रतिपादित ब्रह्म तथा जीव सम्बन्धी शाश्वतता का भी निरूपण हुआ है। इस प्रकार दार्शनिक चेतना के आलोक में ही डॉ0 पाठक की काव्य–कृतियों का मूल्यांकन अधिक प्रासंगिक और उपयुक्त प्रतीत होता है। विज्ञानवाद की दृष्टि से वैदिक धर्म तथा बौद्ध धर्म में अन्तर प्रतीत नहीं होता है। पाठक की काव्य रचनाएँ भगवत्ता के उस आदर्श को प्रकट करती हैं जो जीवन में पूर्णतः स्वीकार्य है। [20]

निष्कर्ष–

प्रत्यक्षतः हम यह कह सकते हैं कि बौद्ध धर्म–दर्शन से हिन्दी साहित्य धारा से एक नई गति मिली है, फिर भी इस तथ्य को नकारा नहीं जा सकता कि यह धारा वर्तमान राजनीतिक प्रभाव से अछूती रही है। बौद्ध दर्शन के मूल स्वर की उपेक्षा कर यह साहित्य–धारा बुद्ध के दर्शन के बुनियादी सामाजिक व मानवीय सैद्धांतिक मूल्यों को नकारती रही है। बुद्ध को मतवाद व पन्थवाद की संकीर्णता में बांधकर उनकी देशना के दार्शनिक पक्ष को नजर–अन्दाज कर, प्रायः उन्हें भौतिकवादी समाज सुधारक के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। बुद्ध के दर्शन का सम्यक अध्ययन जीवन–दर्शन मूलतः आत्ममुक्ति के उदघोष का है।वह भौतिकवाद ओर संसार से पलायन, इन दोनों अतियों को नकार कर मध्यम–मार्ग का उपदेश है। यह दर्शन मानव को आत्मग्राही दृष्टि ओर आत्मकेन्द्रिकता से मुक्त कर, उसे परार्थ हित में समर्पित कर,जीवन को एक नया अर्थ देने का है। बौद्ध धर्म के इस पक्ष की ओर अभी हिन्दी साहित्कारों की दृष्टि सामान्यतः नहीं गयी है।

सन्दर्भ–

1. हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास– एन.सी.ई.आर.टी., दिल्ली संस्करण– 1986
2. हिन्दी साहित्य कोश– ज्ञानमण्डल, वाराणसी, संस्करण– 1960
3. महादेवी– राधाकृष्ण, दिल्ली, संस्करण– 1973
4. स्कन्दगुप्त– राजकमल, दिल्ली– 1994
5. चन्द्रगुप्त– अनुपम, पटना– 2006
6. राहुल सांकृत्यायन : व्यक्तित्व एवं कृतित्व– अलका प्रकाशन, कानपुर– 1995
7. भारतीय साहित्य के निर्माता : साहित्य अकादमी, दिल्ली– 1984
8. दिव्या– विप्लव, लखनऊ– 1958
9. हजारी प्रसाद द्विवेदी ग्रन्थावली– भाग– 1 राजकमल, दिल्ली– 1981
10. आलोचना– पत्रिका, जनवरी–मार्च– 2008, राजकमल, दिल्ली
11. कितने नावें कितनी बार– भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली– 1983
12. कथाकार रांगेय राघव– साहित्य रत्नालय, कानपुर– 1982
13. बौद्ध धर्म के 2500 वर्ष– प्रकाशन विभाग, दिल्ली– 2008
14. दलित कहानी संचयन– साहित्य अकादमी, दिल्ली– 2003
15. यशोधरा– मैथिलीशरण गुप्त, साकेत प्रकाशन, चिरगाँव, झाँसी, प्रथम संस्करण– 1979
16. प्रसाद वाङ्मय– जयशंकर प्रसाद, प्रसाद प्रकाशन, प्रसाद मंदिर, गोवर्द्धनसराय, वाराणसी– 1990–91
17. पूर्णिमा– डॉ0 रमाकान्त पाठक, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली–1981
18. आम्रपाली– डॉ0 रमाकान्त पाठक, मोतीलाल बनारसीदास, अशोक राजपथ, पटना, प्रथम संस्करण– 1981
19. यशोधरा– डॉ0 रमाकान्त पाठक, मोतीलाल बनारसीदास, अशोक राजपथ, पटना, प्रथम संस्करण– 1981
20. तथागत– डॉ0 रमाकान्त पाठक, मोतीलाल बनारसीदास, अशोक राजपथ, पटना, प्रथम संस्करण–1981